Date
Page

Government Degree College, Madhuban,
Pakridayal, East Champaran
(B.R.A.B.U. Muzaffarpur)

B.A., Part - II, Hon./Sub.
Subject : Geography
Topic : दक्षिण का संकीर्ण पठार

By,
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant Professor

Email ID : Jamshedmit@gmail.com
Whatsapp No. : 9097179092

वर्षा ऋतु में तटबंध टूटने पर इस क्षेत्र में बाढ़ आ जाती है। गंगा के तट पर स्थित तटबंध की संकीर्ण पट्टी के सटे दक्षिण वृक्षविहीन निम्न-भूमि है जिसे 'टाल' कहते हैं। यह पटना से मोकामा तक विस्तृत है और वर्षा ऋतु में जल से भरा रहता है। टाल की चौड़ाई मोकामा के समीप लगभग 25 कि.मी. हो जाती

है। बरसात के समय जब दक्षिणी बिहार की नदियाँ अपने साथ बाढ़ का चादरी जल (Flood Sheet) लाती है तो बरियारपुर से किऊल तक की निम्नभूमि जल से भर जाती है। यह विशाल जल क्षेत्र ही टाल का निर्माण करता है। कुछ विद्वान टाल को सोन नदी का पुराना मार्ग मानते हैं। टाल के दक्षिण में विस्तृत मैदानी क्षेत्र स्थित है जो अत्यन्त उपजाऊ जलोढ़ निर्मित समतल मैदान है। इसके दक्षिण बढ़ती ऊँचाई वाला मैदानी भाग स्थित है, जो मैदान और पठार का संगम स्थल बनाता है।

दक्षिण बिहार के मैदान को कर्मनाशा और सोन नदी के बीच सोन - कर्मनाशा दोआब या भोजपुर का मैदान, सोन और किऊल नदी के बीच सोन - किऊल दोआब या मगध का मैदान और किऊल के पूर्व अंग का मैदान कहते हैं। इस पूरे मैदान को सूक्ष्म दृष्टि से तीन उपविभागों में बाँटते हैं —

Date
Page

(i) दक्षिणी बिहार का पश्चिमी मैदान :-

यह सोन नदी के पश्चिम स्थित है जहां ताल नहीं मिलता है। इसे भोजपुर का मैदान कहते हैं।

(ii) दक्षिणी बिहार का मध्यवर्ती मैदान :-

यह सोन और किऊल नदी के बीच स्थित है। इसे मगध का मैदान कहते हैं। यह त्रिभुजाकार है जिसके दक्षिण में छोटी-छोटी पहाड़ियां स्थित हैं। इसमें राजगीर के गर्मकुण्ड स्थित हैं।

(iii) दक्षिणी बिहार का पूर्वी मैदान :—

यह किऊल नदी से राजमहल की पहाड़ी तक विस्तृत है। इसकी आकृति अर्द्ध-वृत्त के समान है, जो तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसमें भी गर्म जल के सीताकुंड, लक्ष्मणकुंड और रामेश्वरकुंड स्थित हैं।

:दक्षिण का संकीर्ण पठार:

बिहार के सुदूर दक्षिण में पठारी भाग स्थित है जो एक संकीर्ण पट्टी के रूप में पश्चिम में कैमूर जिला से लेकर पूर्व में मुंगेर और बांका जिला तक विस्तृत है। यह वास्तव में प्राय-द्वीपीय भारत के पठार का ही एक बाह्य अंग है, जो कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, नवादा, जमुई, मुंगेर और बांका जिले के दक्षिणी भाग में फैला हुआ है। यह कुल मिलाकर 2584 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में विस्तृत है। वस्तुतः बिहार के दक्षिण का यह ऊँचा भाग एक ही पठार का निर्माण नहीं करता है, बल्कि उसमें अनेक पठार हैं जिनकी ऊँचाई अलग-अलग है और कुछ विशेषताएँ भी भिन्न हैं। प्रायद्वीपीय पठार का अंग होने के कारण यह बिहार का प्राचीनतम भूखंड है और कठोर चट्टानों से निर्मित है। किन्तु लम्बी अवधि तक अनाच्छादन की क्रिया के कारण इसका धरातल

असमान हो गया है। इसके पहाड़ियों और टेकरियों (Hills and Hillocks) के मध्य विभिन्न आकार और ऊँचाई वाली मध्यवर्ती घाटियाँ पायी जाती हैं।

Next Class

- कैमूर का पठार
- खड़गपुर की पहाड़ी

Md. Tamshed Alam